माधुरी
पता– गुरू घासीदास वार्ड नं. 15 शीतला मंदिर चौक, महलपारा सराईपाली महासमुंद छ.ग.

डॉ प्रमिला नागवंशी
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शा.दू.ब.महिला स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, रायपुर (छत्तसीगढ़)

सराईपाली ब्लॉक, जिला महासमुंद के विशेष संदर्भ में गोंड जनजाति की महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन

ABSTRACT

छत्तीसगढ़ में जनजातीय समुदायों की सामाजिक और शैक्षिक स्थिति लंबे समय से अनुसंधान का विषय रही है। गोंड जनजाति छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियों में से एक है, छत्तीसगढ़ में गोंड जनजाति व्यापक रूप से फैली हुई है और यह राज्य के लगभग सभी जिलों में निवास करती है, लेकिन इनकी मुख्य सघनता दक्षिणी बस्तर क्षेत्र के सात जिलों सहित बिलासपुर, रायपुर, धमतरी, महासमुंद, दुर्ग, कवर्धा, जांजगीर–चांपा जैसे मैदानी क्षेत्रों में भी है। यह राज्य की सबसे बड़ी और प्रमुख जनजाति है। इनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति, परंपराएँ और सामाजिक व्यवस्था होती है। गोंड समाज में कृषि मुख्य व्यवसाय है। पारंपरिक रूप से महिलाएँ कृषि कार्य, घरेलू कार्य तथा सामाजिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सराईपाली (महासमुंद) में गोंड़ जनजाति की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति निम्न साक्षरता, विशेषकर उच्च शिक्षा में कमी के कारण पिछड़ी हुई है, जो आर्थिक निर्भरता को बढ़ाती है। सामाजिक रूप से, वे पितृसत्तात्मक संरचना में रहते हुए भी घरेलू निर्णयों में स्वतंत्रता रखती हैं, लेकिन रूढ़िवादी परंपराओं और स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति अविश्वास के कारण स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करती हैं।
इस शोध पत्र का उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुंद जिले के सराईपाली ब्लॉक में निवासरत गोंड जनजाति की महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है। अध्ययन में महिलाओं की शिक्षा का स्तर, सामाजिक भूमिका, पारिवारिक स्थिति, आर्थिक सहभागिता और उनके सामने आने वाली समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के प्रसार के बावजूद गोंड जनजाति की महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

KEY WORD

गोंड जनजाति, जनजातीय महिलाएँ, महासमुंद, शिक्षा, सामाजिक स्थिति, सराईपाली ब्लॉक।

प्रस्तावना

भारत की जनसंख्या का कुछ भाग शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से दूर वन, पहाड़ों, घाटियों तराईयों तथा तटीय क्षेत्रों में विशिष्ट जीवन शैली, रहन–सहन, संस्कृति को अपनाये हुए निवासरत् है। बाहरी समाज इन्हें वनवासी, वन्य जनजाति, आदिम जनजाति, जनजाति, आदिवासी आदि नामों से पहचान करता है जबकि उन

समुदायों का विशिष्ट नाम, निवास क्षेत्र, विशिष्ट संस्कृति पायी जाती है।1 भारत जब स्वतंत्र हुआ उसके बाद भारतीय संविधान में इन समाजों के विकास की दृष्टि से एवं राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए विशेष विकासीय प्राधिकरण बनाये हैं। संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत् भारत सरकार द्वारा राज्यों के अनुसूचित जनजाति समूह की सूची जारी किया गया। इन सूचीबद्ध अनुसूचित जनजातियों के समग्र विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक तथा क्षेत्रीय विकास कार्यक्रमों का सृजन एवं क्रियान्वयन किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ मे 42 जनजाति समूह को अनुसूचित जनजाति के रूप में शामिल किया गया है। इस सूची में गोंड जनजाति 16 क्रम पर अंकित है। गोंड जनजाति के विस्तार छत्तीसगढ़ राज्य के साथ ही प्रायः सभी जिलों में बस्तर संभाग (वर्तमान एवं पड़ोसी जिलों) में हैं।

भारत एक बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय देश है जिसमें विभिन्न जनजातीय समुदाय निवास करते हैं। जनजातियाँ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से मुख्यधारा से अपेक्षाकृत पिछड़ी मानी जाती हैं। महिलाएँ किसी भी समाज की प्रगति का महत्वपूर्ण आधार होती हैं। जनजातीय समाज में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होने के बावजूद उनकी शिक्षा और सामाजिक स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर बनी हुई है। इसलिए सराईपाली ब्लॉक में गोंड जनजाति की महिलाओं की शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य

सराईपाली ब्लॉक में गोंड जनजाति की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना।
गोंड जनजाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करना।
शिक्षा और सामाजिक स्थिति के बीच संबंध को समझना।
गोंड महिलाओं के सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं की पहचान करना।

अनुसंधान पद्धति

इस अध्ययन में समाजशास्त्रीय शोध पद्धति का उपयोग किया गया है।
अध्ययन क्षेत्र सराईपाली ब्लॉक, जिला महासमुंद (छत्तीसगढ़)

डाटा संग्रहण के स्रोत

प्राथमिक स्रोत – साक्षात्कार, प्रश्नावली, अवलोकन
द्वितीयक स्रोत – पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट, जनगणना रिपोर्ट

1. ग्राम एवं परिवार चयन

प्रस्तुत अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के सराईपाली ब्लॉक, जिला महासमुंद के गोंड जनजाति बहुल ग्रामों में क्षेत्रीय अध्ययन कार्य किया गया। उद्देश्य मूलक विधि से सराईपाली ब्लॉक, जिला महासमुंद के गोंड जनजाति बहुल 02 ग्रामों का चयन किया गया एवं 100 महिलाओ के शैक्षणिक व सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया गया।

2. तथ्यों का संकलन

प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्राथमिक तथ्यों का संकलन तथा साक्षात्कार किया गया। पारिवारिक सूचनाओं के संकलन हेतु परिवार अनूसूची तथा सामुदायिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार निर्देशिका का उपयोग किया गया।
द्वितीयक तथ्यों का संकलन प्रकाशित शोध ग्रंथो, जनगणना तथा शासकीय प्रतिवेदनों से किया गया।

गोंड जनजाति की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति

सारणी 01: गोंड जनजाति की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति

क्र.	शिक्षा का स्तर	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	30	30
2	प्राथमिक	35	35
3	माध्यमिक	18	18
4	उच्च माध्यमिक	10	10
5	स्नातक	7	7
	कुल	100	100

शिक्षा आदिकाल से ही मानव समाज के विकास का आधार रहा है, इसलिए शिक्षा को विकास का रीढ़ कहा गया है। आदिवासी समाज में परम्परागत रूप से अनौपचारिक शिक्षा, परिवार, समुदाय द्वारा दी जाती है, जिसका उद्देश्य समाज हेतु योग्य व्यक्तित्व का विकास करना रहा है। जबकि भारत की स्वतंत्रता पश्चात् आदिवासी समाज को मुख्यधारा से जोड़ने हेतु उनके विकास के लिए शैक्षणिक विकास को मुख्य आधार मानकर विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से शैक्षणिक विकास का प्रयास जारी है, जिससे आदिवासी समाज की शैक्षणिक स्थिति में विकास हो रहा है।2
छत्तीसगढ़ राज्य की सबसे बड़ी और प्रमुख जनजाति समूह गोंड है।3 अध्ययन से यह पाया गया कि गोंड जनजाति की महिलाओं में साक्षरता दर अपेक्षाकृत कम है। प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या अधिक है। लेकिन माध्यमिक और उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या कम है। आर्थिक स्थिति, सामाजिक परंपराएँ और जागरूकता की कमी शिक्षा में बाधा बनती हैं।
हाल के वर्षों में कुछ सुधार भी देखे गए हैं।
सरकारी योजनाएँ जैसे छात्रवृत्ति, साइकिल योजना, आवासीय विद्यालय। समग्र शिक्षा अभियान के माध्यम से आदिवासी बच्चों को स्कूल तक लाने का प्रयास किया जा रहा है। स्वयं सहायता समूह और महिला जागरूकता कार्यक्रमों से बालिका शिक्षा को बढ़ावा मिला है। नई पीढ़ी की गोंड जनजाति की लड़कियाँ अब

माध्यमिक और कॉलेज स्तर तक की पढाई करने लगी हैं। शिक्षा के साथ–साथ महिला सशक्तिकरण और सामाजिक भागीदारी भी बढ़ रही है।

गोंड जनजाति में शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव है। अधिकांश सदस्य प्राथमिक स्तर तक ही शिक्षित हैं। शिक्षा के क्षेत्र में स्त्री साक्षरता की दर निम्न है। कुछ गोंड शिक्षा ग्रहण करना समय की बर्बादी तथा आर्थिक नुकसान मानते हैं। इसी कारण बालकों को प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् कृषि संबंधी कार्यों में तथा बालिकाओं को घर व छोटे भाई–बहनों की देखभाल में सलग्न कर देते हैं।

महासमुंद जिले में गोंड जनजाति की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति अभी भी चुनौतियों से घिरी है, लेकिन सरकारी योजनाओं, जागरूकता और सामाजिक बदलाव के कारण इसमें धीरे–धीरे सुधार हो रहा है।

शिक्षा तक सीमित पहुँच

अच्छी शिक्षा तक पहुँच एक बुनियादी अधिकार है, फिर भी कई आदिवासी के क्षेत्रों में यह अधिकार अभी भी मुश्किल है। भौगोलिक रूप से अलग–थलग होने की वजह से अक्सर इन इलाकों तक पहुँचना मुश्किल हो जाता है, जहाँ ऊबड़–खाबड़ इलाके, घने जंगल और आने–जाने की सही सुविधाओं की कमी होती है। इस वजह से, जनजातीय समुदाय के बच्चे स्कूल पहुँचने के लिए बड़ी मुश्किलों को पार करते हैं। लंबी दूरी की वजह से कई लोग स्कूल जाने से कतराते हैं, लड़कियों के लिए, उनके घर से 2–3 किलो मीटर दूर बने स्कूल सेकेंडरी और हायर एजुकेशन तक पहुँचने में एक बड़ी रुकावट बन जाते हैं ।

सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ

गरीबी, एक और पुराना मुद्दा है, जो आदिवासियों के बीच पढ़ाई–लिखाई के अंतर को और बढ़ाता है। आदिवासी परिवारों को जिन आर्थिक मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, वे उनके बच्चों को कम उम्र से ही परिवार की रोज़ी–रोटी में मदद करने के लिए मजबूर करती हैं। जब तुरंत गुज़ारा और गुज़ारा दांव पर होता है, तो स्कूल जाने की उम्मीद अक्सर पीछे छूट जाती है। यह एक दुखद स्थिति है जहाँ गुज़ारे की यही लड़ाई इन बच्चों को पढ़ाई पाने के उनके अधिकार से दूर कर देती है।

पढ़ाई की भाषा एक रुकावट

आदिवासी शिक्षा में भाषा एक बड़ी रुकावट रही है। सरकारी स्कूल पढ़ाने के लिए राज्य की भाषा का इस्तेमाल करते हैं, जिससे अक्सर प्राथमिक स्तर पर आदिवासी बच्चे अनजान होते हैं। आदिवासी बच्चों का राज्य की भाषा से कम संपर्क होता है, और वे अपनी घरेलू भाषा में बात करते हैं। इसलिए, वे कक्षा में पढ़ाई और अन्य गतिविधियों को पूरी तरह से समझ नहीं पाते, राज्य की भाषा में पढ़ नहीं पाते या किताब को ठीक से नहीं समझ पाते।4
भाषा पढ़ाई की दुनिया के लिए एक ज़रूरी पुल है, फिर भी कई आदिवासी समुदायों में, यह एक मुश्किल रुकावट बन जाती है। ये समुदाय अक्सर अपनी भाषा या बोलियाँ बोलते हैं, जो स्कूलों में पढ़ाई की अधिकारिक भाषाओं से बहुत अलग होती हैं। भाषा की रुकावट सीखने की प्रक्रिया में रुकावट डालती है

और शिक्षक – विधार्थी के बीच असरदार बातचीत में रुकावट डालती है, जिससे स्कूल छोड़ने वालों की संख्या बढ़ जाती है।

शिक्षक – विधार्थी अनुपात

आदिवासी इलाकों में काबिल शिक्षकों की कमी अच्छी शिक्षा में रुकावट डालती है। कुछ इलाकों में प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है, जबकि दूसरे इलाकों में, शिक्षक आदिवासी विधार्थी की खास ज़रूरतों को समझने और उन्हें पूरा करने के लिए ठीक से तैयार नहीं हो सकते हैं। कई मामलों में, इस कमी की वजह से कक्षा में बहुत भीड़ हो जाती है और हर किसी पर अलग से ध्यान नहीं दिया जाता है।

गोंड महिलाओं की सामाजिक स्थिति

सारणी 02: गोंड महिलाओं की सामाजिक निर्णयों में भागीदारी

क्र.	भागीदारी	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	40	40
2	नहीं	60	60
	कुल	100	100

गोंड समाज में महिलाओं की स्थिति कुछ हद तक सम्मानजनक मानी जाती है, क्योंकि वे आर्थिक गतिविधियों में भी भाग लेती हैं। परिवार के आर्थिक कार्यों में सहभागिता,कृषि और घरेलू कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका,सामाजिक निर्णयों में सीमित भागीदारी,परंपरागत रीति–रिवाजों का पालन,हालांकि शिक्षा की कमी के कारण सामाजिक नेतृत्व में उनकी भागीदारी कम पाई जाती है।
गोंड़ स्त्रियों टोकरियों एवं रस्सियों बनाती है। घर के उद्यानों में वे तम्बाखू तथा कुछ फल फूल भी उगा लेते है। आजकल बहुत से गोंड महिलाएँ खेती और जंगलों में मजदूरी करते है कुछ लोग खानों में भी काम करते है।5

परिवार में महिलाओं की भूमिका

महासमुंद जिले के गोंड समाज में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वे परिवार की देखभाल, बच्चों का पालन–पोषण और घर के सभी कार्यों का संचालन करती हैं। गोंड समाज में महिलाएँ पुरुषों के साथ कृषि कार्यों में भी बराबरी से भाग लेती हैं। हालांकि पारिवारिक निर्णयों में उनकी भूमिका सीमित होती है और अधिकांश महत्वपूर्ण निर्णय पुरुषों द्वारा लिए जाते हैं।

आर्थिक गतिविधियों में योगदान

गोंड महिलाएँ आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रहती हैं। वे खेती, मजदूरी, वनोपज संग्रह (महुआ, तेंदूपत्ता, लकड़ी आदि) और घरेलू उद्योगों में भाग लेती हैं। इन कार्यों से परिवार की आय में उनका महत्वपूर्ण योगदान होता है। फिर भी आर्थिक संसाधनों और संपत्ति पर उनका अधिकार सीमित रहता है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन

गोंड समाज में महिलाएँ सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी करती हैं। त्योहार, विवाह, पारंपरिक नृत्य और धार्मिक अनुष्ठानों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। गोंड समुदाय की परंपराएँ और संस्कृति महिलाओं के माध्यम से ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती हैं।

विवाह प्रथा

गोंड समाज में विवाह को एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था माना जाता है। पहले कम उम्र में विवाह की परंपरा अधिक थी, लेकिन अब शिक्षा और जागरूकता के कारण इसमें कमी आ रही है। विवाह के बाद महिला पति के परिवार के साथ रहती है और परिवार की जिम्मेदारियों को निभाती है।

सुझाव

जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के अधिक अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।
महिलाओं के लिए विशेष जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएँ।
सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए।
महिला स्व–सहायता समूहों को प्रोत्साहित किया जाए।
शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ाए जाएँ।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सराईपाली ब्लॉक में गोंड जनजाति की महिलाओं की सामाजिक भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस क्षेत्र में गोंड समाज में महिलाएँ सामाजिक और सांस्कृतिक समारोहों में सक्रिय रूप से भागीदारी करती हैं। त्योहार, विवाह, पारंपरिक नृत्य और धार्मिक अनुष्ठानों में उनकी अनिवार्य रूप से सहभागिता होती है। लेकिन उनकी शैक्षिक स्थिति अभी भी कमजोर है। अध्ययन से यह पाया गया कि गोंड जनजाति की महिलाओं में साक्षरता दर अपेक्षाकृत कम है। प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या थोड़ी अधिक है। लेकिन माध्यमिक और उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या कम है। शिक्षा के विस्तार और सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार संभव है। इसलिए आवश्यक है कि महासमुंद जिले के सराईपाली ब्लॉक मे गोंड जनजातीय महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया जाए।

संदर्भ सूची

1.डॉ. राजेन्द्र सिंह,गोंड जनजाति में प्रथागत कानून, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़, पृ. 1
2.आशीष कुमार भट्ट, गोंड जनजाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन

आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान क्षेत्रीय ईकाई, बस्तर–जगदलपुर (छ.ग.), पृ. 76
3.डॉ. पंकज सिंह – छत्तीसगढ़ समग्र, नवबोध प्रकाशन, पृ, 161
4.Datta, Krittibas,Goyal, Dr- Mukta,TRIBAL INDIA Issues and Challenges, 2022, KUNAL BOOKS, New Delhi–110002, Page 133
5.तिवारी, विजय कुमार, (2001) छत्तीसगढ़ की जनजातियों,
हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, पृष्ठ 280–10
6. DRISTIIAS.COM
7.जनजातीय विकास विभाग की रिपोर्ट